

दया का आत्मिक वरदान क्या है?

पवित्र आत्मा के बारे में प्रश्न

यीशु के द्वारा पहाड़ी पर दिए हुए धन्य वचनों के उपदेश में से एक, "धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी" (मत्ती 5:7)। दया वह है, जिसे हम तब व्यक्त करते हैं, जब हम परमेश्वर की अगुवाई में अपने दृष्टिकोण, शब्दों और कार्यों में करुणामयी होते हैं। यह किसी के प्रति सहानुभूति महसूस करने से कहीं ज्यादा है; यह प्रेम द्वारा चलित है। दया दूसरों की तत्काल आवश्यकताओं का उत्तर देने और पीड़ा, अकेलापन और दुःख को कम करने की इच्छा रखती है। दया उदार, आत्म-त्याग करने वाली सेवा के साथ शारीरिक, भावनात्मक, वित्तीय, या आत्मिक संकट को सम्बोधित करती है। दया कमजोर, गरीब, शोषित, और भूले हुआओं के लिए नायक है और अक्सर उनकी ओर से कार्य करती है।

मत्ती 20:29-34 में दया का एक सबसे अच्छा उदाहरण मिलता है: "जब वे यरीहो से निकल रहे थे, तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली। और दो अन्धे, जो सड़क के किनारे बैठे थे, यह सुनकर कि यीशु जा रहा है, पुकारकर कहने लगे, "हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।" लोगों ने उन्हें डाँटा कि चुप रहें; पर वे और भी चिल्ला कर बोले, "हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।" तब यीशु ने खड़े होकर, उन्हें बुलाया और कहा, "तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूँ?" उन्होंने उससे कहा, "हे प्रभु, यह कि हमारी आँखें खुल जाएँ।" यीशु ने तरस खाकर उनकी आँखें छूई, और वे तुरन्त

देखने लगे; और उसके पीछे हो लिए।" ध्यान दें कि अन्धे व्यक्तियों के साथ दया एक भाव के साथ नहीं अपितु एक गतिविधि के साथ जुड़ा हुआ है। उनकी शारीरिक समस्या यह थी कि वे नहीं देख पा रहे थे, इसलिए उनके लिए दया का कार्य उनकी दृष्टि को ठीक करने के लिए मसीह का हस्तक्षेप था। दया एक भाव से कहीं अधिक है; यह सदैव एक गतिविधि के पश्चात् आता है।

इस वरदान में सक्रिय सेवा का एक व्यावहारिक निहितार्थ और साथ ही हर्ष के साथ ऐसा करने का दायित्व भी पाया जाता है (रोमियों 12:8)। इसके अतिरिक्त, हम सभी को दयालु होने के लिए बुलाया गया है। यीशु ने मत्ती 25:40 में कहा है कि "मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुमने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया।" मत्ती 5:7 उन लोगों के ऊपर दया के प्रकट किए जाने की प्रतिज्ञा करता है जो दूसरों के प्रति दयालु हैं। आत्मिक रूप से मृत और अन्धे पापियों के रूप में, हम मत्ती 20 में दो अन्धों की तुलना में भले नहीं हैं। जैसे वे अपनी दृष्टि के ठीक किए जाने के लिए मसीह की करुणा पर पूरी तरह से निर्भर थे, ठीक वैसे ही हम भी उस पर निर्भर हैं कि "वह अपनी करुणा हमें दिखाए, और हमारा उद्धार करे" (भजन 85:7)। यह दृढ़ समझ कि हमारी आशा केवल मसीह की दया और हमारे स्वयं की किसी भी योग्यता पर निर्भर नहीं होना चाहिए हमें मसीह की करुणामय सेवा के उदाहरण के पीछे चलने और दूसरों को दया दिखाने के लिए प्रेरित करनी चाहिए जैसी कि यह हमें दिखाई गई है।

स्रोत / Source: <https://www.gotquestions.org/Hindi/Hindi-gift-mercy.html> | English: <https://www.gotquestions.org/gift-of-mercy.html>

www.GotQuestions.org · <https://www.gotquestions.org/Hindi> · © Copyright
Got Questions Ministries · questions@gotquestions.org